

हासिमाकाशीमा...  
माल...  
...  
...

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ADAM ARCHIVES

718



हामायाकाजीका ॥ १ ॥ मन्त्र नका विल ॥ १ ॥  
माल ॥ १ ॥ नमो भगवते ॥ १ ॥ नमो भगवते ॥ १ ॥  
॥ १ ॥ नमो भगवते ॥ १ ॥ नमो भगवते ॥ १ ॥  
॥ १ ॥ नमो भगवते ॥ १ ॥ नमो भगवते ॥ १ ॥



॥ अङ्ग गम्भिरान् ॥

नागरेव वि॥ यत्नवतर्ककालः यद्युगम्भ  
साने सितसवृक्षा वागुकिनागम् गङ्गितम्  
द्या १ गङ्गा नम्भसाने अङ्गकवृक्षा घृणित  
मद्या नङ्कनागम् ॥ ५ ॥ ॐ नृजमङ्गलं नृ  
वक्रियायूनाङ्गस दिगविदिगं चलिदवक्ति  
प २ अङ्गम्भसाने कृष्टिस्तं विपङ्गय नच  
यिसहजा आनन्दय ॥ ॥ ककपिद्यायाव

॥ अङ्गानि नीचाघाट ॥

यत्न गम्भिरान्  
वत्

ति नमद्या जालाकृत्तम्भम्भाने कर्काटकना  
गम्भ १ कर्पकलेनवा वर्कमद्या सप्तसिङ्गनाग  
चूर्ककवृक्षा ॥ ॥ अङ्गहासम्भम्भाने सङ्ख्या  
लनागम् प्रचन्द्रमद्या वर्कमहिपूहा २ लङ्किकवक  
म्भम्भाने कृत्तवृक्षा घृणितमद्या महायदनागम्  
॥ ॥ जालाधकम्भसाने प्रतकवृक्षा अननना  
गम् प्रवननमद्या २ किपिक्किलिवाता अङ्गनवृ



॥ प्रदेना ॥

जा. कलिक नाग. वर्ष न मघा ॥ ॥ दादसह  
जा. दादसह वना. चन्द्रवक्त्रवदना. दादसनय  
ना २ ह नयि कर्कया. नाडवक्त्रसम्बन. कासिना  
मिनीयू. चाययिवदना ॥ ० ॥ ॥ जगपम  
लि ॥ ताल ॥ त्रिहंदा चाययि जागि. दी देहकवा  
दि २ कमलकुलि अद्यन कनक नयि याल ॥  
॥ ५ ॥ जागि दी पु क वी नू. खलं कन जि ययि

॥ चाययि दी विद्या ॥

मि देना ॥

२ स्वनामरु च प्रियायः वमवर्म यिवयि ॥ ५ ॥  
कुप कन अ गि दी लयन जायि २ महि कु  
लक हिया य अ दियान समान ॥ ५ ॥ सा  
सुह द्य न बाल का चि कु ना नि २ चन्द्र सूर्य  
दूयि य कु न रं द ॥ ५ ॥ ॥ ह न यि गु ज लि ह म  
कु न दू व वि ना २ न य ना वी द लय न वि ना ॥  
॥ ५ ॥ ० ॥



॥ पञ्चगव्याः ॥

ॐ नमः वज्रसत्त्वाय ॥ ॥ पञ्चगव्याः कलकः पञ्च  
गव्याः यवकानि ॥ ॥ सर्वपापविनाशार्थः पूजार्थः य  
विज्ञाय च महाकावूनिकानार्थः ॥ ५ ॥ हिमयचक्रगव्यकं  
॥ ॥ ॥ लोचनः हनार्थः हयवमस्यनः कलयालस्यं  
जितापचक्रगव्यधयागुस्वः प्रसन्नरुस्यविज्ञायमा  
लः हवालस्यः यकचिदयाकादकः कानधालसाः सं  
पूर्वपापदूटक्यानिमितीनः अर्थनं स्वअः हन

॥ पञ्चगव्याः ॥

निलयकर्मपूजाः कलदवताः ॥ १ ॥ सुदवताः स्वसुदव  
ताः पूजायाय अर्थनं स्वअः ॥ सुचियायया निमिर्दिनं  
अः हनं वालस्यया यलसं ॥ मामः ववूयता दूय विद्यागु  
थमनः मामववूयतः मले मूत त्यागयागुयायः मामया  
कदूरस्यकागुः थगुयाय दूटक्यानिमिर्दिनः अर्थ  
नं स्वअः कलयालस्यं पञ्चगव्याः धयागुस्वः प्रसन्न  
रुस्यविज्ञायमाले ॥ १ ॥ कायवाकचिदसूध



नार्थः दूर्जर्जिपिग्धधनार्थः महाकात्रिका  
हार्थः दक्षिमेयचरगवर्क ॥ ३ ॥ लोचनः हृदयः  
आँठ ॥ कायध्यागुः सपित्रः वाक्कायगुः कूर्तुः  
चिठकायगुः नूगलेः हृमनूकः थस्वनाः काय  
वाक्कायः पुध्यायः अर्थनस्वताः हनंदूर्जर्जि  
अन्यमूलालकेताः अर्थनस्वताः हयगमस्वताः  
नाः पचरगवर्ककायगुः चतुषास्यनंप्रसन्नरुच्यमा

न ॥ ३ ॥ अस्याद्वजिनसंस्तुतः सर्वधातुविश्वध  
कः महाकात्रिकानार्थः दक्षिमेयचरगवर्क ॥ ४ ॥  
लोचननाआँठः जिनशुलताः मामववृत्ताउपनसंः  
यापयाकादयिताः हनंगुपूयाउपनसंयापयाका  
दयिताः हनंः सिर्जनः नपाः यापयादयिताः हनं  
समस्तयाउपनसंयापयाकादयिताः थनपापदू  
टकायाः निमिर्जनंजिनाः पचरगवर्ककायगुः यसं







॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पचरगव्यविषधून॥ कनसलिलः सुधरुलधका  
गुन्ननं श्लादयकस्य विष्णात॥ दक्षिनाक्षति  
ज्वलकाय॥ ॥ नागहर्षवि॥ ॥ अकानसं  
जातपितृवन ॐ नृ जिषया दय २ जिगिह्वेन वा २  
वक्रामनीयीता वासुकिनागम त्वष्टाग्रहीषन धूनिन  
जलदा॥ ३ ॥ ॐ गद्यपति क्रमात् महाकाल कुत्र  
या लयागीनीगद्य॥ मद्यमांस् मच्चपचरे विधयूजन

॥ श्रीचक्राष्टाष्टा ॥

गृह्णन्तु स्वाजं नु पीयन्तु॥ १ ॥ चवर्गजान नदितल  
धनऊपि यलयाद प्रचर्द्धेन वा २ नृद्रायनी स्वता नऊ  
कनागम कर्कषवागय धूनिन जलदा॥ २ ॥ तवर्गज  
त विहागव नृष्ट अश्वकया दय नृयलेन वा ३ ॐ दाय  
नी कंक्रम कर्कोठ कनागम जाल कलानादित कनदा  
॥ ३ ॥ चवर्गजान पर्वत समुने चूतया दय कपिदरे  
ल वा २ वावाही नका यन्मातृजंग कर्लकलेन वा वल्लीज



नदा ॥ ४ ॥ यवर्जजानं. वववृआ. लभकर्पअयाद. कोधले  
 नवा २ कामाजीवका. मसायमा. अट्टहासप्रचण्डजनदा  
 ॥ ५ ॥ यवर्जजानं. मारुग्रहति. दिऊयक. निपादय. अ  
 नकलेनवा २ वेष्टविष्टामा. अनकनाग. लक्ष्मीवर्ध. रु  
 नासनयूनधज ॥ ६ ॥ यवर्जजानं. पुन्यगृहवाघ. अ  
 अशनयादय. संहानलेनवा २ चामूष्ण. नकाकुलिकनाग  
 धानांधकान. वर्णकजनदा ॥ ७ ॥ यवर्जजानं. अजन्म

ॐ अने. वनयादय. रोषनलेनवा २ महालक्ष्मि. धना. सं  
 खपालनाग. किलिकिलि. नावावर्षने. जनदा ॥ ८ ॥  
 लेनव. कालिपाद. रुन्यदादधनयन. अलिधचनन  
 श्वेदवर्दने. नविकवर्धन. मामिह. नूअ. रुव. रुय. रुनधः  
 ॥ ९ ॥ ॥ नागललित ॥ गालजति ॥ यचरु. नथगत. ज  
 नमलिया. न. समयाचा. निरु. वेध. ना. न. २ द. अ. दि. स. द. अ.  
 व. न. अ. ना. धिया. न. समया. न. न. रु. ल. ति. हा ॥ १० ॥ वील

॥ यचरुनभागाट ॥

॥ अनेकनयायाट ॥



वीलध्वज वेधनाय मधुलसमूहा विध्वजालिया २५  
 ईकान वीलदान दयादा दायित्या विध्वनिववाय ॥ २ ॥  
 पूर्ववेधनाय न दक्षिणवत्तसमूह अमिनारुय सिमवा  
 यिता २७ रुन अभाद्य सिधि मास अकाल समया न दह  
 चकिता ॥ ३ ॥ समाधि श्रीसम्वन मास काल चक्रं हवउ  
 काय विध्वजालिया २ यागयागीनी वृद्धकनया समया  
 न दह लता ॥ ४ ॥ सिद्धिनाद वांजियाय उमप्रपहार्य

अरुयागिनीमये दानयूय २ जावधनियूता अवधूवन  
 यियाय कर्हयाचन हव न ॥ ५ ॥ ॥ गगनाट ॥  
 तालुक्ति ॥ ॥ नमामि जिनयचर धर्म धातु स्वयं ह २ ति  
 हव द अ नू रूपः धर्म धातु वागी ध्वनं ॥ ६ ॥ नमामि २ जि  
 नयचर न दमा सु २ द अ ह मि द्वा किं समहा स्रयाया ॥ ७ ॥  
 स्वर्गम क्षया तालः हव द श्री काया त क २ उ च उ निव  
 ऊनः महामूनि धया ॥ ८ ॥ धर्म श्री मित्रः हान श्री मित्र  
 नया ल मधुल मायाः स्रया स्रयि ॥ ९ ॥ वाम ह ऊ पूर

॥ नमामि जिनय २ ॥  
 ॥ याग ले कायायाट ॥

॥ नमामि जिनय २ ॥  
 ॥ याग ले कायायाट ॥



॥ नमो भगवते ॥

कः धनं धनं २ दहि म न त्रिषु ख भः स व ध नी ॥ ५ ॥  
श्री लो क धन म क ल म हा शु ख ला या २ ना का द्वि ना क श्री  
नू लं द्र म ल द व ॥ ७ ॥ श्री व ज्ञा चार्यः व भू द रु आ च  
र्य २ रु न यि वा क व ऊः त्रि ला च वि ना ॥ ॥ ॥  
ना ग के न डि न ल ऊ ति ॥ न क व हू द रु दि रु ऊ का ष्ठः  
२ न ग न म कू ट क ष्ठि नी ला य नि ॥ ५ ॥ न मा द वी वि  
घ्रा ध नी त्रि द ष्ठ य य वा यि ना २ ष्ठि सि दि द य नि उ ग  
न ऊ न नि ॥ ॥ द हि न हा हि नि वा म पा रु धा नि २ वि चि

निलेश को ल सा द्या ८

॥ यन हरे ज व स के ना ॥

व यू ष्म मा ला क न आ धा नि ॥ ॥ हा नू म द ल मा ष्ठ प्रा क  
ल नू यि नि २ ना ना व ल ल न यू य प्र वी ति नि ॥ ॥ रु न यि  
व ल व ऊ न व ऊ जी ना २ श्री व ऊ द वी च न न मा नू स न ना  
॥ ॥ ॥ ना ग ल लि नः ना ल ऊ ति ॥ रु न हू ऊ न क मू  
रु द्र द य लू धा नि धा न्य म ऊ श्री यू स क वा म २ नि दि द  
अ न व ल व र्ष स र्व कि द व दि न द चि द रु स ॥ ५ ॥ न  
मा मि २ श्री व सू च ना द वी न ला रु प द रु वि ना रु क न क व  
रू न ल म कू टा मे ति ल लि ना स न द्रा नि द रु न ॥ ॥

भू न न न चा द्या ८ ॥ व स न न चा द्या ८ ॥



॥ श्री हनुमान नमः ॥  
॥ हनुमान नमः ॥

उद्धत आगनक्षिप्त लोकं ध्वजं वामवज्रपाणिगुलाद्वी  
रजम्वज्रजलेन्द्रनीलवर्णं वामवज्रसूक्तवर्णं ॥  
॥ चिविकुक्षिलिमालिनी मूकवर्णं द्रुमुहक्षत्रिंश  
चामलज्जध्वजयनाकासक चतुर्नदवी ॥ पूर्वमा  
निरुद्रदक्षिणपूर्वहृदयस्थिमधनदा वैश्रवर्णरजु  
कासुगुफासप्तस्वनिदवी चक्षुकाकाभाजयता ॥ ॥  
॥ नागकक्षादिनालजति ॥ ॥ श्री हनुमान नमः ॥  
दवी श्री हनुमानाथा रयचक्षुनिनयापिना यचक्षुवर्णद

निलकुक्षिलयाद्याट  
मूकनिनयाद्याट

॥ श्री हनुमान नमः ॥  
॥ श्री हनुमान नमः ॥

हा ॥ ५२ ॥ नमामि २ श्री लम्पच्छगर्भेसाः हनुवक्ष्मीगुग्ग  
ध्वनिवज्रजगिनी शुभ्यता ॥ ॥ पूर्वदिगंस्थित हनुव  
निलवर्णरदहिनपात्रध्वनि वामविन्दधना ॥ ॥  
घस्मनि चोचि जगिनी दवी रजमूर्ति निलावजः ह  
कापसंबजा ॥ ॥ ॥ नागनाट ॥ नालजति ॥  
रयातल कानगपत्राधियाप २ सिद्धाजगिनी वधूद  
रुनपद्रुदव ॥ ५२ ॥ नमामि २ श्री लोकध्वजप्रिहवन  
नाथा रकपूनामयजगत उध्वनि ॥ ॥ हनुनववक्ता

वर्षनयाद्याट



सुखसुख

ॐ न्यादिगयाला २ नाग ऊ ऊ ग द। वदि न च न छ ॥ ॥  
तुक्क सुक्क न के पाप ह न छ २ व्याधिया निद्र दू ४ ख रु य ह  
न छ ॥ ॥ सुखा व गि ह व न धर्म स न छ २ श्री लो क  
अ न ऊ र्म ऊ र्म अ न छ ॥ ॥ ॥ नाग माल तिल ॥  
माल मा ० सह ऊ सु पा नू च ह नू च क वि न्या २ त्रि ह च  
न ना था द हि विला सा ॥ ५ ॥ ॐ ऊ र्म म हा न स गु ह्या  
हि ष क २ क म ल कू लि अ र्म ऊ ग स र द्वा ॥ ॥ ह्री  
न अ नू पि नि वि अ व्या पि नी २ वृ द न्ति न म न म हा

मायजालयाद्याः

निर्माणाम्बुज

सुखदाता ॥ ॥ उद्घाटित नागी का नू धिय प्र वि स  
२ र्था यि या ष ठ च क रे दि या ग य दू ॥ ॥ गु नू य अ द्य  
अ नू र्म न क्रि या २ द हि म ना न नी र्म सा न स मू द्रा ॥ ॥  
ह्री न अ नू पि नी ॥ ॥ काला यि ल जी ठ ॥ ॥ ॥  
ना ग न ह रे वी ॥ माल ऊ ति ॥ निर्मा णा म्बु ज म्बु ग न क ल  
आ. य च ह मृ न म य प नि पू नि ता २ वि ध म य ग हि न य च  
पु ल्क वाः नी ल व र्ण व ऊ जि न सि स्थ पि ता ॥ ५ ॥ ॥ दू र्म क न  
दू व जा चा र्थ म नु वि न्या जि नः क र्म व ऊ स हि न प्र णा अ नू

मध्वमन्याद्याः



यिनी रव ऊजिष्वाहि भम नु य नि पूर्ण हनु ना ह व सम  
 दसक न धि ति ध न ह न ध ॥ ॥ पूर्व द न ग न य च ह स  
 ग्रस हि र्ग य च र विं श ति ह दि व र्द्ध का र्थ २ द क्रि द न ग न  
 व ऊ स त्व ध न र्पः त्रि ह व द स म न सा या य ण वि श्रु द्वि ॥ ॥  
 प श्वि म द न ग न भ न व स स्था यि ना ध व वा व र्द्ध सो धि न स र  
 जि ना २ उ र्द्ध न द न ग न घ ष्ठा धा व ष्ठा दि नाः स्ना न स्व नू यि ती  
 वि श्रु न न नि ॥ ॥ आ ल ना दि द न ग न ध न यी ना नू द स  
 म व र्द्ध न ग ष्ठा यि ना र य ष्ठा वि न्या जि त वि ध म य

नमो भगवते

पूजिता प्रदामा मि व ऊ ध व जि व सा धृ ता ॥ ॥ ॥  
 नो ग र्ह न वि ॥ निर्मा ना वि च नु ष ष्टि द न स ना नू द म  
 अ ग न का दि वृ न ना द नू यि २ स मि ल य वि त ल लि त  
 वा र्द्ध ग म मि नि न न नि ल स न य द्म कू प न नू यि ॥ ॥ ॥  
 अ न मा मि द वी श्री व ऊ वी नो ति नि त्रि ह य ह न ध म र  
 म ह्ना न द वी २ अ दि या न य र्द्ध गि नि का म नू य श्री ह न  
 स वि श्रु द म ह ल नू य य नि ॥ ॥ व स द न स ना नू द  
 व ल धं म च क्री षो द न स रं ग च क्री २ द्वा रि श न द न

भद्रं कुरुते सर्वान्



कमलमहासूर्यचक्रं कावचं यथा ह्येव नार्थः ॥ ॥  
 दहति जिने विद्यादिति नृणां न ह्येदं अवलम्बनं यथा  
 पिनी रयी भदिदं अहमि सूर्यं तेषु जने जिने ह्यनयाय  
 निवीयं यथा ॥ ॥ दय्यनेयति विष्णुजलज्जचन्द्रायम  
 अहिनि सिद्धिमुमर्तवज्जदवी २ जलमज्जमर्तुं श्याय  
 अजलमर्तुं जिनां जनमाज्जयदं ॥ ॥ ॥ वागहे  
 ववी ॥ नमामि र्यद्वानि मां मकिं देवी जगत्सं  
 वागहे ववी ॥ नमामि र्यहीतावति महायक्रुद्धि देवी २  
 यचरं तयुपनिवाचाय नि देवी ॥ ॥ नमामि र्य

ॐ

मि २ श्रीगोत्रमि ॥

यन्न निमामकि देवी जगत्संसावयपियापित्ता २ ज  
 लमज्जमर्तुं सिद्धिमाकृमूकियुष्मदं नार्थः ॥ ॥  
 ॥ ॥ नमामि र्यहीतावधनदेवविजयासाहितार  
 दादं वर्षयुष्मदं विचापित्ता ॥ ॥ नमामि र्यहीच  
 जानामहि कृनि देवी २ धर्मधनुयपिवापित्ता नित्य  
 नित्ययनि ॥ ॥ नमामि र्यमर्तुवज्जदगीतचपित्ता  
 र्यधेमामि श्रीयन्न नि देवी अहि सिद्धिदहिम ॥ ॥

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥







ॐ लिङ्गं कायम्

१ आलिङ्गद्वयमानवचतमशगपहेनवस्यनय  
द्वः चाचूतः कालनाभिः त्रिद्वयनमनाहयाः साग्य  
ताः चूदविद्याः आनन्दाः पूर्यमानः निरूपयमसु  
रवर्दः स्वास्यह्लाः गसंज्ञः आवाधोः न कमानः जि  
नगुहानमिर्तः पातुवाः श्रीसम्यगावः ॥ ० ॥ ॥  
१ दज्जज्ज ॥ ॐ आवेज्जय त्वरेय २ आक्कहि वज्जो र्हे र्हे  
० आरुमूः ॐ आवेज्जय त्वरेय २ वज्ज २ वज्ज ४ चालय २  
हेरु आरु ॥ ५४ ॥ ॥ लिङ्गाय ॥ ॐ तिष्ठ वज्जो धामाय

ॐ लिङ्गं कायम् ॥  
ॐ लिङ्गं कायम् ॥

॥ मण्डलसमय ॥

ॐ श्रीं वज्जिरुवदुदतिव्हाहं र्वं हं स्वाहा ॥ लिङ्गाय नमः ॥  
जागवनापिः नालज्जनि ॥ मण्डलसमयचक्रम  
हलसंयुक्तं २ द्वादसहजचउचाचूवदय ॥ ५४ ॥  
जानककपूनश्रीसम्यगाजीनि २ श्रीसंयचूला  
द्वीनानधी ॥ ॥ जिकिणी नामास्वद्युपास्यपूयि  
ही २ चाविमानचउथानथायियाय ॥ ॥ कायवा  
कचिरुनि त्रिद्वयने २ दानयति यागुसश्रवणन  
ही ॥ ॥ यागयागिणी भनि समदहलवे २ अस्त

॥ मण्डलसमय ॥  
॥ मण्डलसमय ॥



[illegible]

॥ अविस्मृत्ययादा ॥

ॐ २ कृत्वा तु मेखनं अनूपमचलं नोपवह  
 रवने ॥ ॥ हव्यदयानेनैकैर्जुष्यते दहिन  
 स्नानकूलिम् २ लावालवविवर्जितं अनूपमग  
 यनेनैव यिही ॥ ॥ यद्रूपमवजुष्यदसिले गतधनि  
 या गमवकिहासकूलिसा २ अनूपमसिधिमज्ज  
 दायनीः यनमासि जीवजुष्या गिही ॥ ॥ ॥



॥ रत्नमन्दल ॥  
॥ वक्रवर्धन्याया ॥

जागनातक ॥ गानदूर्जमान ॥ ॥ लनूमन्दलमा  
मः कलितकं काया २ आलिकाविइयिचापयिह  
पूज ॥ ॥ नमामि २ श्रीनिलानंद त्रितवधना  
था ॥ ॥ वज्रवायाहि आर्लिंगन अद्वय ॥  
कृष्णवर्धन चतुर्मुख त्रिनिहायना २ विष्णुकलिज  
अर्धचतुर्गुणरुत ॥ ॥ जकिणीगामावधुना  
हाप्रमिणी ॥ २ ॥ चतुर्नदवीकीर्तिविलासा ॥

॥ रत्नमन्दल ॥

॥ विष्णुवर्धन्याया ॥

॥ ॥ लखितषट्मूद्राचक्रिर्वापय्यन २ हनयि  
अनूपमवक्ररूपं दासा ॥ ॥ ॥ जागमधू  
मत ॥ गालमाथ ॥ ॥ प्रमूदित आदि दण्डमि  
संदपितनमः प्रमल्लसन्स्थितः प्रयना २ द्वाद  
सः लज्जामिः चापिचउवदनः सुखलः वज्रवाया  
हिकलः आर्लिंगम ॥ ॥ ॥ दूर्दूर्दूर्दहृदिहृ  
वनेमानसयनसम्प्रापिया २ दंद आर्लिंगम

॥ प्रमूदित ॥



अक्षय सुलवे. नचयिदाने सम्यज्जाया ॥ ॥  
 कुलिगघेष्टु. गऊचर्मिष्टिगु. कनक्ति. दमत्र  
 शुहसाहिना ॥ ॥ मभयूनिस्तकपात्र. उव दौला. पा  
 सयत्र शुवक्र जिप. गधना ॥ ॥ यश्चिन्नवत्रः  
 मकूत आलंकृता. षष्ठु मूद्रा. आरुचद्विहृषिता  
 ॥ ॥ आलिका निद्रयि आलिह चायमि वाद्यचर्मनि  
 यमघटकेष्टननू ॥ ॥ नलसिलमालात्रम्याजी

॥ सप्तमः ॥

सम्यज्जदिवचकुत्रिनिक्कूदहिना ॥ ॥ उत्रमऊमभा  
 चुरुरयाय अजदः अऊनियत्रमादिवऊगीना ॥ ॥  
 ॥ ॥ यागमात्रसि ॥ ॥ नालमा ॥ ॥ सहजसूत्रात्रह  
 हत्रवकनिय ॥ ॥ त्रित्वननाथादहिविलासा ॥ ॥ ॥  
 हऊमिसहात्रसगुह्यारिश्चके ॥ ॥ कमलकुलिग. स  
 यागसंख्या ॥ ॥ ॥ स्नानयत्रयिनि. विध्यवायीही ॥ ॥  
 कदनि. त्रमने. महासूत्रवदाना ॥ ॥ ॥ उद्गाद्यवउना

॥ मार्याजालेष्टाट ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निकायधियप्रविश २ यायिया वउचव ह दियाग  
इ ॥ ॥ गुनप्रसाद्य अनुरूपक्रिया २ देहि म. नाप  
निर्मुक्तसमूहा ॥ कानधूपीनी ॥ ॥ ॥  
नागकक्षा ॥ नालषट्काल ॥ ॥ नीलवर्णवाग्नि  
दवीचक्रिकुलकलिलाचक्रमखल हृदिवनपुष्प  
पक्षपिता ॥ ३ ॥ सुसमानसं हृदिकसंपूर्णता २ स्व  
स्वविजाऊन समूल्यनादवीमामकी ॥ ॥ नमो

३३

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ भूताननिष्ठाया ॥

पितावर्ध

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ भगवते वासुदेवाय ॥

मि २ दवीगीमामकी २ नवजीवनीदवी. त्रिनेत्रसु  
सुन्दरी ॥ ॥ यचरकृष्ण अमृतपात्र २ सुवासुजन  
त्रे. वन्दितचपल ॥ ॥ ॥ नागवह्नि ॥ नालम  
य ॥ ॥ पीतवर्णमामकिदवी. विश्ववापिता २ अ  
मृतपानत्रवाग्नीदवी ॥ ॥ नवजीवनलोकसु  
सुन्दरी २ स्वस्वीजाऊन समूल्यना ॥ ॥ चक्रिक  
कुलकलिलाचक्रमखला २ लज्जहसंयुक्ता गणत

॥ लज्जहसंयुक्ता गणत ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

३ क्का  
दिवता ॥ ॥ नमामि वायूनी देवी सूर्य ध्वनी २ प  
ज्यामिममना वांछिता ॥ ॥ अतगुचयन धाय प्र  
मामिरुक्ता २ अनुरुचय सिद्धिमा कुप्ये द ॥ ॥ ॥  
नागकद ॥ तालषट्काल ॥ ॥ हनिन वर्धमानि ॥  
नयनसूदनी नवजोवन नावदोदहा ॥ ३ ॥ तु  
क्तदवीमामकी वायूनी देवी ॥ ॥ अस्माद ग हजा  
रुलननुकिये ॥ २ य चरवूध ह्यत्रया तुक्तजगि

॥ निलेक्षकानययाद्याट ॥

॥ प्रियप्रमथानि ॥

दीस्यती ॥ ३ ॥ हकालहनिन वर्धमाना कायगंध  
नाशन २ की कायवीर्य हना अमृताकार ॥ ॥  
सतगुचयन धाय प्रियया २ हनयि सिद्धि  
वज्र वज्राचार्यगीत ॥ ॥ ॥ नागमात्रजि ॥ न  
लमाथ ॥ ॥ प्रियप्रमथानि निववित्रक जायि २ द  
ल्लिगलसूतन गृगता ॥ ३ ॥ हृदिकल्लुसिज  
साउदिनसूनादि २ अनुराजवृद्धी हनियोगि ॥

॥ सहजसूयाद्याट ॥



॥ माया जाल ॥

नदितसूत्रपीभीष्टसूत्रमी २ अधिपयवनयूनिनच  
क ॥ ॥ एतेकापयषितकुलि ॥ २ नदुहवयाषरू  
याययिषूर्ष ॥ ॥ षट्सफचक्रजामतिनिनादि २  
अन्यान्यमाघसमहासूषदाना ॥ ॥ ॥ जागद  
अथक ॥ ॥ मायाजाल ॥ विन्दुसदिसुनिना २ माहमाया  
दर्यनकादिलेमायामाह ॥ ॥ ॥ यगीतानु ॥ ॥ अ  
॥ २ जागद्वषमाहनः कादिले निन आ ॥ ॥ ॥ अ

॥ सहजसुखावादा ॥

संज्ञाला

मिषनयनदुधकपूचिया २ कूमरीचिंतक दूषनय  
द ॥ ॥ सहजसंज्ञावय उर्दनागत धनीया २ य  
सायनमवास्तनय ॥ ॥ ॥ अवधूअ उदयचन्द्रपा  
यः प्रसाद २ गीर्तिदूषन लवचक्रनवधि ॥ ॥  
॥ ॥ जागमाला ॥ ॥ अकमालाकर्णधृत्वावसान  
स्थवलिखया ॥ ॥ जयति जाधवीतीर्थः कामादनामप्रदि  
मिना ॥ ॥ ॥ जागकामादलेनवी ॥ ॥ ॥ अदिवधना



॥ अदिपुत्रादिपुत्रा ॥

थ श्रीकृष्णमय २ पुस्तनसिलविहाय समाधिजाग  
॥ ५२ ॥ श्रीदियंकवर्तनालोकनाथ २ जगतसंसाय  
सत्त्वप्राप्तिउधाय ॥ ॥ श्रीश्रीकृष्णनि मायादवीपु  
सूर्य २ लवदूयना ॥ अर्ध ॥ अर्धतदहा ॥ ॥ ध्यानदि  
हिलवलयहपद २ ॥ लोहभाहमाया नासनक  
र्ध ॥ ॥ स्वत्यापमितालभाकदहा २ लक्ष्मीजनध  
नवलरुलप्रसादा ॥ ॥ लनयिमूधममदावना  
हि २ अहान नासनचपलसुपन ॥ ॥ ॥

॥ अशनिनिघाट ॥

॥ अशनिनिघाट ॥

वागश्रुभालि ॥ तालसाक ॥ ॥ अवननिहितजा  
नविलासनदेहा २ कुरुकुत्रिनयनरिषमदेहा ॥  
॥ ५२ ॥ तैनादूद २ दूददूजात अचलकाधलाया  
॥ ॥ निविधितयनदूति ॥ अहिनलैला २ योशव  
अधवीठिलवननाथ ॥ ॥ हविहवप्रका ॥ ॥ ॥  
चउमाला २ मालविद्यनदूति ॥ अहरेयहपद ॥ ॥  
विविधियतनभालि ॥ लंकृतदेहा २ जगतवाजितः  
वलरुलप्रदान ॥ ॥ ॥

॥ अशनिनिघाट ॥



॥ वरुणाजीनी ॥

गगमाव ॥ तालमा ० ॥ ॥ वरुणाजीनी हव  
लाया २ त्रिहवननाथ दहिमया ॥ ५ ॥ यिव  
०० यमहाय समहासुख कुपिया २ वरुदेवी रुल  
अनुरुलला ॥ ॥ उधना विप्रिदल कमलस  
याग २ दहिवीया अपवन हलिये ॥ ॥ रुज ००  
यपक्रमहासुख कुपि २ यक्रमियस विजवापने ॥  
॥ ॥ सतगुप्यसादचतुर्थाहिकुक् २ यानेखन  
संसाय समुद्रा ॥ ० ॥ ॥ गगयद्वजनि ॥ ताल

॥ विष्णुप्रसथानियाद्याट ॥

॥ वरुणाद्याट ॥

॥ दिवहृज ॥

॥ दिवहृज प्रक्रमवतकवर्ध २ नजनमदूदक  
अत्रिनिनाचना ॥ ५ ॥ नमादेवीवृद्धजकिनी  
जिनहननी २ त्रिहवनयापिनी जिनहानज  
किनी ॥ ॥ दहिनकवतिवकुविलासितदध  
तिश्वामकयातकचतुसायसवयि ॥ ॥ तव  
नीमहुलमाज्जुदिया नगमन २ वतनप्रव  
लगनतयवेमिन ॥ ॥ श्रीविद्याधविदेवीसूनन  
यमहिना ॥ ॥ सकल अद्विष्टिदहिममाना ॥ ० ॥ ॥

॥ महुलसमयमाद्याट ॥

॥ ॥



॥ कलितवज्र ॥

नागमधुना ॥ तालद्वय ॥ कलितवज्रानवज्जी  
चक्रसम्भवकालाद्वज्रिकाजवप्रमाद ॥ मांसा  
रुति मद्यमानससंयुक्ता यचरुसालिमद्यमानस  
कनु ॥ ५२ ॥ खेखेखाहि २ नेज्वकन्दनयच  
मियायस अलिवलिना ॥ जीवजयागिणी ॥  
किणीनामाखेखेनाहाप्रियणी यचरुयागिणी ॥ ५३ ॥  
छत्रिहविषविषं ज्वनमल कलग कि लि कि

॥ अथ कथाया ॥

लायमान ॥ उमपूषष्ठाधनिप्रमूदिनवाजिया  
लेदानयनि विघ्नविनासिना ॥ ५४ ॥ यागिणीयचरु  
दवीयचक्षमद्यतत्वेना खेखेखेखेना निषधिया  
मायविनासनवकचकसयया अहिमनसखेखे  
लभाकरवकु ॥ ५५ ॥ सर्वसिधिलवा ऊरु जाग  
नाकवाकुरिआचार्यसान्निचिरुसा ययमाक  
निरुलपाधिसयया अनूक्यनसखेमाकप्रदाना ॥ ० ॥

॥



॥ अथ विद्या टक ॥

गङ्गा ललित ॥ ॥ अथ विद्या न क र्क काय संज्ञा न र  
गङ्गा मूर्ख गङ्गा पति श्रुति नृप दत्त ॥ ३ ॥ नमो मि  
श्रुत मूर्ख का धया गा र्ध्व व क नील वर्ण र्पि ग ल  
क म् ॥ ॥ षट् लङ्ग द ह द क न र्क अ क द म र्  
श्वाम क पाल ध्व य पा ग र्ध्व द्वा ग ध्व यि ॥ ॥ मूर्ख  
माल व्याघ्र चर्म त म्बा त ना र द ह दि ग मा न वि ध्व  
ग ह वी ना ॥ ॥ म धि सि धी व ल वि ध्व वि ध्व स न र

॥ अथ विद्या टक ॥

॥ श्रीमद्भक्त गोप ॥

गङ्गा न क र्क काय व र्ज गी ता ॥ ० ॥ ॥ गङ्गा क  
न दि ॥ ॥ श्रीमद्भक्त नाथ व न महा चि त वि र्ज या र च  
लु हा स र्व र्ज ध्व यि ना ग वा स द ह्व र् ॥ ३ ॥ नमो  
मि र्श म र्श क माला र्ज ग दि र्ध्व य र्ज ग न गु रू ह  
व ह व्या पि ना ॥ ॥ य र्क ध्व य र्क य द म गु रू ला या  
र श्री धर्म ध्व य न न्य पाल म ह्व ल र्क ना ॥ ॥  
ज ग न ना थ ज ग न नि र्ज न ना थ र स र्व सा नु वि ध्व  
ल प ह्व त नि र्ज न ना ॥ ० ॥ ॥

॥ श्रीमद्भक्त गोप ॥



॥ कृष्णाय नमः ॥

जागलामकवि ॥ नालमा ॥ ॥ श्रीकृष्णपालगी  
लिखवननिवासिताः अमिताहसिलमालिधल  
॥ ५२ ॥ नमामि श्री आनंददिलाकषयः प्रिह  
वनवापितसूमंगला ॥ ५२ ॥ मनिमयस्वरि  
नपर्वतऊताधनः नकवर्धकमनासनं ॥ ५२ ॥  
वेतजागसंज्ञन अन्नरूपल्लाघपद्मः लघुनिमृगु  
क्रियलसंपदना ॥ ५२ ॥ अन्नन्यमनाहनः वा

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥ श्रीगुरुदेवाय नमः ॥

गमनिमल्लोतविधिनिविद्ययक गद्येऽथ  
ना ॥ ५२ ॥ ॥ नागकुरु ॥ ॥ भववेसान  
लमिहितवदना ॥ ५२ ॥ विधिगलकः श्रीकालि  
कादेवी ॥ ५२ ॥ जगदभाऊकालीः श्रीचामुन्दादे  
वी ॥ ५२ ॥ सूर्यसमदहाः विद्वकपालधना ॥ ५२ ॥  
लहजदयः स्वर्णरुतकधना ॥ ५२ ॥ कालचक्रदह  
नवः अलिंगनसमाधि ॥ ५२ ॥ नागविशुद्धिः म

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥